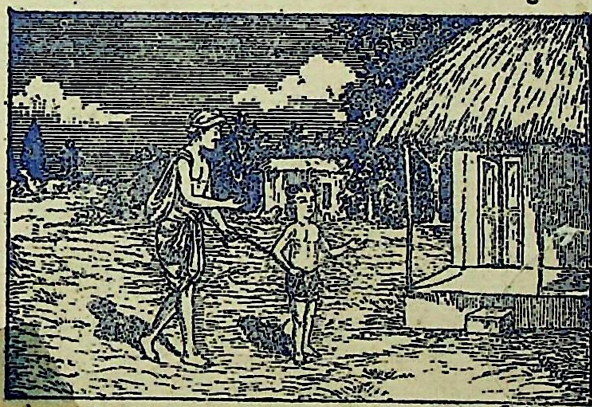
...भजनावली

...र-नीति

...राम भटीपुर निवासी कृत





जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस
गुजरी बाजार, मेरठ।

शुद्ध संस्करण] सन् १९७१ [मूल्य एक रुपये

चौ० सेढ़ूसिंह, फूलसिंह, शंकरदास, गंगादास, मीरदाद के बनाये उत्तम-उत्तम भजन पांच रुपये मनिआर्डर से भेजकर मंगाओ।



• ओ३म् •

❀ ज्ञान भजनावली ❀

(दूसरा भाग)

चौधरी घीसाराम भटीपुर निवासी कृत

❀ भजन न०—१ परमेश्वर स्तुति ❀

टेक—लीनी शरण तुम्हारी नाथों के नाथ ॥

झड़—हूं सब छोटों से छोटा, और सब खोटों से खोटा।
जोड़े दोनों हाथ, सन्तन के हितकारी ॥१॥

झड़—घट घट व्यापक हो स्वामी, कृपा करो अन्तर्यामी।
नाऊं निश दिन माथ, सुध लो प्रभु हमारी ॥२॥

झड़—एक तुम्हीं हो रक्षक मेरे, मारन वाले बहुतेरे।
गहूं भक्ति का साथ, मेटो विपता सारी ॥३॥

झड़—गुण 'घीसाराम' गाता है, त्रियताप मिटे चाहता है।
धर्म का प्यावो बाथ, पाप रोग कटें भारी ॥४॥

❀ भजन न०—२ जैन मत खण्डन ❀

दोहा—परमेश्वर से विमुख हो बौद्ध नास्तिक जैन।
जाने क्यों भूले फिरें यही सोच दिन रैन ॥

टेक—टुक समझो जैनी भाईयों, क्यों फंसे भ्रमके जालमें ॥

उलटे अर्थ सत्य पहचाने, ईश्वर वेद झूंठ कर जाने।
वाम मारगी आर्य माने, खामी पड़ी ख़याल में ॥
वृथा मत दोष लगाइयो ॥१॥ जो सृष्टि के रचने हारा,
घट घट में वासे करतारा। कैसे दिल से उसे बिसारा,
व्यापक तीनों काल में ॥ उसको त्यागा अन्याइयो॥२॥
जिसमें है प्रलय उत्पत्ती, झूंटा कहते मूढ़ असत्ती।
बकने लागे बात कुपत्ती, फंस फंस चाल कुचाल में ॥
कोई ज्ञानवन्त समझाइयो ॥३॥ पूर्वले करमों से ज्ञानी,
ऊंच नीच जन्मे है प्रानी। आवागमन क्यों झूंठी जानी,
पूछूं तुम से हाल मैं ॥ जरा सोच के भेद बताइयो ॥४
शंकराचार्य ने फटकारे, मूर्त्ति पूजन भूल प्यारे।
देकर जहर ब्राह्मण मारे, काज बने इस ढाल में ॥
किसीऔरको नहीं सताइयो॥५॥वेद पढ़नको भईनाबुद्धि,
प्रतिमा पूजन लगे विरुद्धी। तुम तो जरा संभालो शुद्धी,
भाषा वेद विशाल में ॥ मन सत्य बात में लाइयो ॥६॥
मरे हुवों की मूर्त्ति बनाना, परमेश्वर कर उनको माना।
येही परम धर्म पहचाना, दिल ना दीनदयाल में ॥
इन जड़ोंसे चित्त हटाईयो ॥७॥ मूर्त्ति पूजा तुमने चलाई,
जग में अविद्या धुन्द मचाई। सो भी नष्टअब होतीआई,



पड़गया खलल बवाल में ॥ 'घीसा' प्रभुके गुण गाईयो॥८

* भजन नं०—३ स्तुति *

टेक-भजो हरि२ पाखंडों को दूर करो रे दूरकरोरे३ भजो०
जिस प्रभु ने तन पैदाकिया, उसकातो भजन जरूरकरोरे॥
थोड़े दिन की जिन्दगानी है. किस जीवनपै गरूर करोरे॥
बिनप्रभु अपना कोईन जगमें, कांहेकोझूंठेफितूरकरोरे॥
एकदिना उसकेघर जाना, उसदिनका प्यारे शऊरकरोरे॥
'घीसराम' भटीपुर बासी मेरा तो माफ कसूर करोरे ॥

* भजन नं०—४ स्तुति *

टेक—भजो हरि हरि उमर नुहीं जाती है ॥
किस जीवनपर गर्व करत है, दो दिन जगमें बराती है ॥
जितने आये जग में हो गये; ये मौत सभी को खाती है ॥
दीन दुखी जीवों को सतावे; करी क्यों बज्जरकी छातीहै ॥
'घीसा' कहे धर्मकर धारण, इस बिन कोई नहीं साथी है॥

* भजन नं०—५ स्तुति *

टेक—मत भूलो भजन को ईश्वर के गुण गावो रे ।
वही तारण तरण है, ईश्वर के गुण गावो रे ॥
कली-वही पिता वही है माता, वोही जगतगुरु कहलाता ।
पालन करे बुद्धि का दाता, ध्यान उसी से लावो रे ॥१॥

वोही राजों का महाराज है,वोही सब ताजोंका ताज है।
वोही सब काजों का काज है,उसी की शरण जावोरे ॥२
वोही गुणियों में विज्ञानी, वोही बलियों में बलवानी।
वोही दानियोंसे बड़ा दानी,उसीको शीश निवावोरे ॥३॥
वोही है सृष्टि का करता;वोही पालन कर दुःख हरता।
वोही उर में आनन्द भरता,'घीसा' उसको पावोरे ॥४॥

* भजन न०—६ प्रार्थना *

टेक—दीनदयाल दया निध स्वामी जन हितकारी हे ईश्वर
मुझ पतित को पार उतारो प्रभूहूं शरणतुम्हारी हे ईश्वर
कुछभक्त भजनकी जाननहीं;प्रभुज्ञान ध्यानगुणखाननहीं।
कोईमुझसा निपटनादान नहींहूं निपटअनारी हेईश्वर ॥
भवसागर का दरियाव बगैःवहांफिरूं कहीं बल्लीनलगै।
है तुझ बिनना कोई और जगै,लो सुध हमारी हे ईश्वर ॥
कोई दानी दानसे तरजावे,कोई ज्ञानीज्ञान से सुख पावे।
यहां कोई जतन बन आवे,तेरी भक्ति प्यारी हे ईश्वर ॥
जिन सुमरलिया सो पारगया,सोअपना जन्मसुधारगया।
वो जनका करउपकार गया,तुझपर बलिहारी हेईश्वर ॥
'घीसा'दिनरात आस तेरी,प्रभु मनसा पूरण कर मेरी।
कहो मेरी वार क्या है देरी यह अर्ज गुजारी हे ईश्वर।



* भजन न०—७ प्रार्थना *

टेक—भवसागर में नईया, प्रभु करदो पार ॥

झड़—ये गहर भंवरमें अटकी, चहुँ ओरको श्रुति झटकी। आरत हूं लाचार ॥१॥ झड़—तुम बिन को धीर धरैया, बल्ली के नाथ खिवैया। मतना लावो वार ॥२॥ झड़—मद काम क्रोध के जल हैं मोह लोभ भंवर प्रबल हैं। भय नाकेकरें गुञ्जार॥३॥झड़—ना तुम बिन मोरे कोई, सुनो दीनबन्धु अरजोई। 'घीसा' ताबेदार ॥४॥

* भजन न०—८ प्रार्थना *

टेक—पार लगादो मोरी नईया पार लगादो पार लगा०॥

कली—गहरी नदिया नाव झोजरी कोई ना खिवैया ॥१॥

जैसे बाज ने चिड़ी दबाई, सिंह ने गैया ॥२॥

तुही केवट तुही पालनहारा, तुही पितु मैया ॥३॥

तुही विपत में रक्षक स्वामी, धीर धरैया ॥४॥

'घीसाराम' भटीपुर बासी, ना कछु कवैया ॥५॥

* भजन न०—६ उपासना मे *

टेक—जगतपति जनकी सुध लईयो हे ईश्वर, जगत० ॥

भवनिधि भारी टूटी नइया, तुम बिन कोई न धीरधरैया। इस नइया के तुम्हीं खिवैया कृपा करके पार लगईयो ॥१

दुष्ट अविद्या गर्दन मारे, जैसे बाज़ चिड़ी हन डारे ।
परबश हाहाकार पुकारे, दीनबन्धु मेरे प्राण बचइयो ॥
निर्बल गौ सिंह ने घेरी, थर थर कांपत विपत घनेरी ।
आरत बचन दुखी हो टेरी, इस दुश्मन से फन्द छुड़इयो ॥
जब असुरनने भक्त सताये, रक्षा कर २ प्राण बचाये ।
'घीसाराम' शरण प्रभु आये, पूरण ज्ञान हियेमें दइयाये ॥

* भजन नं०—१० ओ३म् शब्द *

सब कहो महाशय ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥
सब नामों से है ये प्यारा आदि में ये वेदों ने उचारा ।
मूलमन्त्र महिमाहै अपारा; इसे धारण करो सारी कौम ३॥
अकार उकार मकार मिलाकर, विश्वरूपवैराट दिखाकर ।
अनेकगुणखुशहो दिललाकर, आनन्द होजाय खिलेरोम ३॥
काम क्रोधमद लोभको हरता, शोक मोह भयदूरये करता ।
सुन्दर प्रकाश हियेमें भरता जैसे गगनमें रवि सोम ३ ॥
'घीसा' कहे भटीपुर बासी, मुक्त देत ईश्वर अविनाशी ।
आवागवनकी कटजाय फांसी, बढ़ेउरमें भक्तिका जोम ३॥

* भजन नं०—११ नमस्ते *

सब करो नमस्ते खुश हो हो हो ॥
जब तुम मिलो आपसमें भ्राता, है येहीशब्द बड़ासुखदाता ।

अभिमान और विरोध मिटाता,तुम इसमेंही चित्त दो२॥१
पां लागन को घमंड जानो, और दंडवत दंड पिछानो।
राम २ शोकातुर मानो,फिर क्यों नाम धे लो लो लो॥२
सलाम यावनी भाषा भाई, वेद पुराणों में ना गाई।
कुछ दिन से थे दई सुनाई,रहे थे अविद्या नींद सोसोसो॥३
एक पिता है सबका प्यारो, ो भ्राता उर ज्ञान विचारो।
'घीसा' कह न हिम्मत हारो,दिल के दाग धो धो धो॥४

* भजन न०–१२ स्वामी दयानन्द जी के परोपकार *

टेक–धन२ स्वामीजी महाराज धर्मकी राह बतानेवाले॥
किया वेदों का प्रकाश, जग की अविद्या का नाश।
तुमसे पूरण पाद की आस; सत्य मरियाद चलाने वाले॥१
कहीं वैदिक यन्त्राला, कहीं खोली पाठशाला।
कहीं बनवाई गौशाला, हो पालन कराने वाले॥२॥
मची सत्य विद्या की धूम, हुई सबको ये मालूम।
खुल गये प्रजा के मक़सूम,थे सोतों को जगाने वाले॥३॥
भया धर्म का प्रचार, जग में होती जय जयकार।
'घीसा' निश दिन ताबेदार,धन्य हो भर्म मिटाने वाले॥४

* भजन न०–१३ स्वामी जी की महिमा प्रसंशा *

टेक–दयानन्द दया के सागर दयाधर हो तो ऐसा हो।

जगत का भार तारन को, ऋषिवर हो तो ऐसा हो !।
किया वेदों का उच्चारण, अविद्या नष्ट के कारण ।
किया सत्यधर्मको धारण,जोफक्कर हो तो ऐसा हो ।।१।।
डटे निज धर्म के रन में, अधर्मी विजय कर छन में ।
मृत्यु का भय नहीं मन में,वीरबर हो तो ऐसा हो ।।२।।
किया वैदिक धर्म जारी, जती वो बाल ब्रह्मचारी ।
कभी हिम्मत नहीं हारी, सखी नर हो तो ऐसा हो ।।३।।
प्राण पर काज में दीने, सोच मृत्यु के ना कीने ।
'घीसा' ये यश लीने, सुअवसर हो तो ऐसा हो ।।४।।

* भजन नं०—१४ स्वामी जी के पुरुषार्थ में *

टेक—रड़के पोप दलों में, स्वामी जी के तीर ।।
झड़—जब चढ़के पोप दल आये,चहुं दिशा पाखंडी छाये ।
छिद गये भर्म शरीर ।।१।। झड़—रिपु मार मारकर टेरे,
कीने थे जतन घनेरे । नयनों बरसें नीर ।।२।।
गढ़ गये धर्म के झन्डे, मलें दोनों हाथ मुसटन्डे ।
था दिल दलगीर ।।३।। कटी भारतवर्ष की फांसी,
अधर्म की कटी निकासी । ऐसे थे रणधीर ।।४।।
थे धर्म चलाने वाले, और जान गंवाने वाले ।
उस का गुण अकसीर ।।५।। गुण घीसा राम कथ गाता,

गुणियों को सीस नवाता, तोड़ दई भर्म जंजीर ॥६॥

* भजन नं०—१५ स्वामी जी की यादगार *

टेक—ज़रा फिरभी दर्शन दीजो, ज़रा फिरभी फेरा करियो, वेदों के सुनाने वाले ॥ झड़—तुम उसी धमक से आईयो, विद्या प्रकाश दिखाईयो। पोपों के मान घटाईयो, मर्याद चलाने वाले ॥ १ ॥ कुछ रही अविद्या बाकी, करते हैं पोप चलाकी, दया धर्म से करें नचा की। पाखण्ड बढ़ाने वाले ॥२॥ भारत आरत दुख पाया, तुमने ही धर्म चलाया, पर काज में त्यागी काया। प्राणों के गंवाने वाले ॥३॥ महिमा न जाय बखानी, सारी प्रजा ने जानी, 'घीसा' मूरख अज्ञानी। भजनों के गाने वाले ॥४॥ जरा फिर भी फेरा करियो०

* भजन नं०—१६ स्वामी जी की विजय *

टेक—हारगये२ हारगये स्वामीजी से पोप दल हार गये ॥
बड़े-बड़े पंडित काशी जीके सम्मुखहो लाचार गये ॥१॥
देश-देश में वेद प्रकाशा बिगड़ी डगर सुधार गये ॥
जिन२वेदोंका लोप भया था, कर२ भाष्य उच्चार गये ॥२
प्रतिमा पूजन को खंडन कर, जारी कर निराकार गये ॥
बंगाला बम्बई सिन्ध तक पंजाब और हरिद्वार गये ॥३

'घीसा' कहै वेद कर जारी भव सागर से पार गये ॥४॥

* भजन न०—१७ स्वामी जी की प्रशंसा *

टेक—धन्य२दयानन्द महाराज डूबतीपार लगादईनईया ॥
भारत सागर में पापों का बढ़ गया नीर अपार ।
भारी भवंर लहर पापों की अटकी नाव कुधार ॥१॥
प्रतिमा पूजन नाके, मछली भरम मगर घड़ियाल ।
सर्प अविद्या निर्विष करदई बल्ली हाथ सम्हाल ॥२॥
इस सागर में चक्कर खाकर डूबे बहुत जहाज ।
बेड़ा पार किया स्वामी ने सिद्ध किया सब काज ॥३॥
धर्म की बेल जगत में बोई अपने प्राण गंवाय ।
ऐसा धर्मी होना मुशकिल सोते दिये जगाय ॥४॥
भ्रम जाल को दूर बगावो खोलो धर्म कपाट ।
वैदिक धर्म संजोवो प्यारे कहता 'घीसा' जाट ॥५॥

* भजन न०—१८ धर्म में *

टेक-रहनाधर्मकेआधार आधारमेरेप्यारेआधारमेरेप्यारे ।
बिना धर्म कोई न साथी मतलब का है संसार २ ।
मेरे प्यारे संसार मेरे प्यारे, रहना० ॥१॥
मरती बार यही संग जावे चले न कुटम परवार२ ।
मात पिता प्यारे मुये सुत फैंकदें ढेला सा बार २ ॥

कोई मरघट तक संग में जावे धरदें चिता के मझार ।
काष्ठ सा फूंक आवे अग्नि में कोई न करता प्यार ॥
पीठ फेर कर घर को आते रो रो के होते लाचार ।
जब ये धर्म रहे है संग में प्रलय में भी ये ही यार ॥
'घीसाराम' भटीपुर बासी करता ज्ञान उचार ।

* भजन न०—१९—भारत विलाप *

टेक—भारतवर्ष में फैली है प्यारे कैसी अविद्या, कैसी०॥
वेद का पढ़ना पढ़ाना छोड़ा, हांकन लगे पुराण गपोड़ा ।
कोईकुरानअन्जील उचारे॥१॥कोईमसजिद गिरजाधाते,
कोई काबेको पूजन जाते ,शिवालय ठाकुर द्वारे ॥२॥
कोइ जीव को ब्रह्म बतावें, कोई जन्म मृत्यु ठहरावें ।
कोईउसको बिलकुल बिसारे॥३॥कोईप्रतिमा पूजनठाने,
कोई तोबा करनिजात माने । कोई खुदाका बेटा पुकारे ॥४
कोई शराबी कोई कबाबी,कोई रण्डी बाज़ी से ख़राबी ।
कोईखुदाकहकर जीवमारे॥५॥ऐसीअविद्याकोबिसरावो,
सांचे एक धर्मपर आवो ।'घीसाराम' आधीन तुम्हारे ॥६

* भजन न०—२०भारत उन्नति में *

टेक—जागे जागे जागे भारत के भाग ।
मुनि दयानन्द सन्यासी, सत विद्या वेद प्रकाशी,

पुराणों का भया त्याग ॥१॥ बज गये वेद के बाजे, सब पोप पाखण्डी लाजे, पाप की बुझ गई आग ॥२॥ बन गये वैदिक यंत्रालय; गुरुकुलों के ठाठ निराले, किले अज्ञानी नाग ॥३॥ अब ब्रह्मचारी पढ़ पढ़ के, जीतेंगे सभा अड़ २ के, धर्म के मारग लाग ॥४॥ घर घर गायत्री जारी, हों अग्नि होत्र बड़े भारी, ज्ञान के जलें चिराग ॥५॥ गढ़ गये वेद के झन्डे, रोते हैं पुजारी पंडे, पटकते फिरते पाग ॥६॥ हो गया प्रतिमा खंडन, वेदों का कर गये मंडन, ईश्वर में अनुराग ॥७॥ कहै 'घीसाराम' चित्त लावो, विधावों के नियोग करावो, फेर के चढ़े सुहाग ॥८॥

※ भजन न०—२१ जगत उपकार में ※

टेक—कीजे जगत का सुधार मेरे प्यारे, सुधार मेरे प्यारे।
गुरुकुल गोशाला बनवावो, विद्यों का करना प्रचार ॥
अनाथालय कन्या पाठशाला; खोलो धर्म के दुवार।
स्वामी जी ने धन तन छोड़ा, छोड़ा नहीं उपकार ॥
नर तन पाके परमारथ में कभी न मानो हार हार०।
'घीसा' कहै दया उर धारो, मेरी अरज हरबार हर० ॥५॥

※ भजन न०—२२ कन्याओं प्रर्थना ※

टेक—कन्या कर जोड़ पुकारी, सुनों ये अर्ज हमारी,

सुत जन्में तो मंगल गावो, दान करो बाजे बजवावो,
हम जन्में तो अति दुख पावो, रोवें पिता महतारी ॥१॥
दिल से हमको नहीं पालते, कितने पापी मार डालते,
रोटी कपड़े तक भी टालते देते सौ सौ गारी ॥२॥
पुत्रों पर बड़े लाड़ लड़ावत, मेवा मिठाई दूध खिलावत,
हमको सिर पर भार बतावत, छाती पर सिला भारी ॥३॥
सुतों को विद्या हुनर सिखाते, हमको पढ़ने नहीं बैठाते,
बिना स्वयम्बर ब्याह रचाते, जिससे पड़ती ख्वारी ॥४॥
कोई हम पर धन ले लेते, जोग कुजोग ब्याह दुख देते।
कब तांई दुख रोवें केते, अवला निपट बिचारी ॥५॥
जब हम सब कन्या मर जावें, फिर ये पुत्र कहां से आवें,
बार २ तुमको समझावें, काहे को विपता डारी ॥६॥
बेटा बेटी दोनों सम हैं, कैसे हमको समझें कम हैं,
ये इन्साफ चाहती हम हैं, होय कोई न्यायकारी ॥७॥
सुतों के ब्याह कई कर लेवें, हमको सभी हरह दुख देवें,
कहै 'घीसा' दुख कबलों खेवें, कब समझोगे हमें प्यारी ॥८

* भजन न०–२३ आपस की फूट *

टेक–कब तक ना छोड़ोगे आपस की फूट ॥
झड़–तुम एक छोड़के प्यारे, कीने मत न्यारे न्यारे।

अधर्म ने धर्म बिगारे, सब दुशमन भये तुम्हारे ॥
देखलो चारों खूंट ॥१॥ कोई हिन्दू क्रिया हीन,
कोई मुसल्मान सत्य छीन । कोई जैनी कोई क्रिश्चीन,
कोई नास्तिक कोई नवीन ॥ कर्म क्रिया गई छूट ॥२॥
एक एक को मारन चाहता । लड़ २ के नाश हो जाता,
कोई मुफ्त माल को खाता ॥ बन पोप फिरे बहकाता,
मच रही लूटम लूट ॥३॥ तुम एक धर्म पर आवो,
ये पोप फन्द बिसरावो । वेदों से ध्यान लगावो,
ये ब्रह्म ग्यान पी जावो है ये अमृत घूट ॥४॥
सुत प्रहलाद से लड़ के, मरे हिरण्यकश्यप जी बिगड़ के,
मरे कौरव अड़ अड़के, रावण भ्राता से बिछड़ के ॥
गई गढ़ लंका टूट ॥५॥ ईश्वर को एक ही जानो,
तुम एक धर्म पहचानो । क्यों झूठे झगड़े ठानो,
'घीसा' आजिज की मानो ॥ छोड़ो छल और झूंट ॥६॥

* भजन न०—२४ पुराणों के विषय में *

टेक—छोड़ो जी छोड़ो २ ये पुराण, ध्यान वेदों पै धारो
देवी भागवत बीच लिखा है देवी जग करतार,
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष जी रचा सकल संसार ॥१॥
पद्म पुराण भागवत कहते बड़े विष्णु भगवान,

शिव ब्रह्मा देवीकरी जिसने रचदिया सभी जहान ।।२
लिंग पुराण कहै यूं गाके सब से बड़े महेश,
लिंगका आदि अन्त न पाया आज हरि सहें कलेश ।।३।।
महाभारत के शान्ति पर्व में मरे लिखे शुकदेव,
पीछे भागवत कैसे सुनाई, इसका कहदो भेद ।।४।।
एक एक को जिन्दा करता, लड़े एक से एक,
इन ठारा में कौन सा, सांचा सोचो जरा विवेक ।।५।।
सब से पहले वेद भये हैं, उन्हीं में सांचा ग्यान,
'घीसा' कहै वेदों को मानो; छोड़ो सब तोफान० ।।६।।

* भजन न०–२५ पृथ्वी के भार में *

टेक–होगये पृथ्वीऊपर भार नरप्रजाको बहकाने कोवाले
किया चारों वेद का त्याग, रच २ पुराण को निर्भाग ।
कोई कुरान से रहे लाग, कोई अंजील सुनाने वाले ।।१।।
कोई प्रतिमा पूजन करता, कोई राधा कृष्ण सुमरता,
कोई ईसा में चित्त धरता, कोई नबी के ध्याने वाले ।।२
कोई शिवालय मंढमें धावें, कोई मसजिद गिरजा धावें,
कोई ऊंची टेर सुनावें कोई शंख बजाने वाले ।।३।।
दीना एक धर्म को छोड़, सौ सौ मत में करें मरोड़ ।
अपने कर्म लिये न्यूं फोड़, हो गये दुखके पाने वाले ।।४।।

चली प्रजा में छलियाई, भोलों की मति भरमाई,
'घीसा' कहता चेलोभाई, हम सोतों के जगाने वाले ॥५॥

* भजन नं०—२६ वेदों के उच्चारण में *

टेक—हम तो वेदों के बाजे बजाय रहे हैं ।
सत्य विद्याका प्रचार करके,पापन अविद्या हटाय रहेहैं ।
घर २ वेद मन्त्र गायत्री, पढ़ें पढ़ावें सुनाय रहे हैं ॥२॥
जैसे भारत पहले था,येवैसाही फिरके बनाय रहे हैं ॥४॥
प्रतिमा पूजन गड़बड़ झाला,सारे पाखंडभगाय रहे हैं ॥४
'घीसा'कहत भटीपुरवासी सतकी मर्यादा चलाय रहेहैं ॥५

* भजन नं०—२७ पोप लीला में *

टेक—रहना २ हुशियार पोपों के फन्दे से ।
श्रावण में जो घोड़ी व्यावे, धन्य २ अपने भाग ।
पोप खोल खूंटे से बांधे इस विध होना राग ।
ऊपर होते है सवार यार; पापों के फन्दे से ॥१॥
माघ मास में भैंस जो ब्याही, जागी है तकदीर ।
खोलके दे दई गुजराती को, खाय कहां से खीर ॥
जाके बंधी बिगाने बार ॥२॥ सूरी बच्चे बारह देती
उसे न लेवे कोय । देखो धनी की किस्मत अच्छी,
ये ही अचंभा मोय ॥ फिरती संग बच्चों के लार ॥३॥

बछिया बछड़ू चढ़े छात पर उसे विप्र ले जाय। अपना धन दे दिया और को हाथ मींड पछताय॥ पड़ गई बे समझी से हार ॥४॥ जनमें नारी पुत्र जोड़िया उसे कोई ना देता। यहां कहां गई पुराणिक लीला, कौन मते से चेता॥ ना तो जाती रहती नार ॥५॥ मुद्दत बीती सोते सोते किस गफ़लत में सोये। फंसे पुराणों की माया में वैदिक धर्म बिछोये॥ अबतो लीजो पलक उघार ॥६॥ 'घीसाराम' भटीपुरबासी समझावे कर जोड़। वेद भाष्य को समझो प्यारे, उलटे मारग छोड़॥ तुमसे कहता ताबेदार ॥७॥

* भजन न०—२८ पोप लीला *

टेक—फांसे मायामें नरनार क्या पोपोंने जाल फलाया॥
पीपल तुलसी पत्थर पूजें परमेश्वर बिसरावें।
वे तो आपी जड़ वस्तु हैं कैसे मुक्ति पावें॥१॥
शिव विष्णु और राम कृष्ण जी इनके मन्दर बनाते।
गिरजा काबा मसजिद जा जा शीश नवाते॥२॥
सेढ़ू शीतला चन्डी भुमिया पूजें मरी मसाणी।
देवी काली ललता माई बकरे माणस खाणी॥३॥
गौ हिंसक की कबर पूजते धोके गूंगा पीर।

जोगी चूहड़ों को सिर नावें फूट गई तकदीर ॥४॥
ईसाई के पाप छुटावें कहें खुदा का बेटा।
जो पापों से बख्शिश चाहे तो बुद्धि का हेटा ॥५॥
कहै मुहम्मद दोस्त खुदा का और हैं दुश्मन लोग।
लेकर नाम जीव को मारें अपना चाहें भोग ॥६॥
व्रत रहें और बेटे मांगें पूजें सत्ती ऊत।
वे तो आपही ऊत चले गये किसको देंगे पूत ॥७॥
अपने सुत के जीवन कारण और जीव को मारें।
उनका कैसे भला होवे गया क्योंना ज्ञान विचारे ॥८॥
स्वार्थियों ने जगह जगह अपनी दुकान बनाई।
भोले लोगों के धन हड़ लिये दया धर्म बिसराई ॥९॥
वैदिक धर्म ग्रहण कर प्यारे करो सत्य व्यवहार।
हाथ जोड़ के करे विनती 'घीसा' ताबेदार ॥१०॥

* भजन न०–२९ पोप लीला *

टेक–फैलाया सब जग में पोपों ने जाल ॥

वेदों को नहीं सुनाते, पढ़ें पुराण को गरवाते।
धर्मकी करदई टाल ॥१॥ शिव मढ़ और ठाकुरद्वारे,
मसजिद और गिरजा न्यारे। प्रतिमा रची विशाल ॥२
बन गये पुजारी पंडे, अधर्म के गाढ़ दिये झन्डे।

खाते मुफ्ती माल ॥३॥ कोई स्याने भगत कहावे, वृथा ही मूंड हिलावे । बकरे करें हलाल ॥४॥ कंठी ललता वो भवाणी, देवी काली भई राणी । चढ़ावे चढ़ें विशाल ॥५॥ कोई गया में पिंड भरे है, मुर्दों के श्राद्ध करे है। धन हरने का बबाल ॥६॥ कहै 'घीसाराम' सुनो भाई, वेदों की समय अब आई । अब तो करो ख़याल ॥७॥ फैलाया सब जग में०

* भजन न०—३० नियोग में *

टेक—सुनियों भारत वासी विधुओं का विलाप ॥

हो शादी उमर यानी में, पति मरे से दुख जवानी में । मर रहि जिससे कांप ॥१॥ क्या काशीनाथ ने कीना, हम को दारुण दुख दीना । रात दिन देतीं श्राप ॥२॥ वेदों में नियोग लिखा है, उसको क्यों बन्द करा है । सहन को तीनों ताप ॥३॥ अपने कई ब्याह करें हैं ॥ विधुवा ये विपत भरें हैं । दया उर धारो आप ॥४॥ हम अवला निपट बिचारी, बिन खता हिये से बिसारी । हुये दुशमन मां बाप ॥५॥ व्यभिचार में चित्त फंसाये, हिंसा हो गर्भ गिराये । बड़ा हो जावे पाप ॥६॥ ये दुख ना मिटे जब लो, तुम सुखी ना होगे तबलो ।

भोगो महा कलाप ॥७॥ ये 'घीसाराम' की अरज़ी,
सुनलो तो आपकी मरज़ी । जपो ईश के जाप ॥८॥

* भजन न०-३१ जवांना के मध में *

टेक-जिसे कहते हैं जवानी, ये तो हैं बिलकुल नदानी ॥
आंख में स्याई मुख में स्याई,स्याई सर सरदारके मांही ।
भसी स्याह रूह होनी चाही, ऐसी मत बौरानी ॥१॥
नेत्रों से ना देता दिखाई, बहरे कान सुना ना जाई ।
जड़े होश हुई अकिल हवाई,फिरता जने खफ़गानी ॥२॥
माता पिता गुरु बिसरावे, ज्ञान ध्यान तप भजन ना भावे ।
वरजें तो लड़ने को आवें, अहंकारी अभिमानी ॥३॥
किस जीवन के ऊपर तरजें,शेर सा शीस बुढापा गरजै ।
'घीसाराम' रात दिन बरजै, उतर जायगा पानी ॥४॥

* भजन न०-३२ जैनियों के विषय में *

टेक-परमेश्वरको मतना भूलो सबजनका वही पालनहारा
आदि वही और अन्त वही है,घट२ में व्यापक करतारा ।
सृष्टि रचे और प्रलय कर्ता,सर्वोत्तम शुचि सर्वाधारा ॥१
जड़ चेतन्य दोऊ वस्तु हैं, जिससे रचा सकल संसारा ।
आपसे आप मिले ये कैसे, इनको वही मिलावन हारा ॥२
जड़ चेतन्य स्वभाव करके,कैसे उपजा सोच यह भारा ।

फिर जड़ रहत काष्टकी नाहीं; जिसदम चेतनहोवे न्यारा ।।३
कोई बड़ा कोई छोटा जन्में, कोई राजा कोई रंक नकारा ।
आवागवन पूरबले कर्म बिन, कैसे भये ये प्रश्न हमारा ।।४
जीव पाप जब गुप्त करे है, कोई ना दीखे सुनो पियारा ।
पापभी जड़और दड़ ीजड़है किसविध भोगेकरो विचारा५
उत्पति प्रलय आवागमन रू, मानो ईश जोनाथ तुम्हारा ।
कहै 'घीसा' सुनो विनय महाशय चूकक्षमामें निपटगंवारा।६

✲ भजन नं०—३३ वेदान्तियों में नवीन ✲

टेक—जीव को ब्रह्म कहो ना तजके मरियाद ।।

पानी से आग बुझावे, छतरी से धूप रुक जावे ।
क्षमा से मिटै फिसाद ।।१।। हियलगामसे रुक जाता,
अंकुश से गज बस आता, शिष्य रोकै उस्ताद ।।२।।
फिर ऊंट नकेल से रोकै, खर बल पर दंडा झोकै ।
फेर ना करे विवाद ।।३।। मन्त्र से नाग विष जावे,
तन रोग दवा हैटावे, खोय देवे बुनियाद ।।४।।
प्रजा को बाढ़ हैं राजे, राजों के प्रभु सिर साजे ।
हिये पूरा एतकाद ।।५।। मूरखों का यत्न नहीं है,
कवियों ने सत्य कही है, बिना बुद्धि मरियाद ।।६।।
आपे को ब्रह्म बताया, ज्यूं हिरण्य कश्यप गर्भाया ।

भये रिपु सुत प्रह्लाद।।७।।जगजीव ब्रह्म त्रियमानो,
'घीसा' कहै सांची जानो,करो मत मिथ्या वाद ।।८

* भजन न०–३५ चुप ताल में *

टेक–धीरे चल धरती हल जायगी ।।
चढ़ी जोबन की मस्ती, ये ऐसे मस्तान गज घूमें।
जैसे मिचरहीं आंख नशेमें,कैसे ज्वानी तेरीढलजायगी ।।१
विद्या पढ़ीनायोग कमाया,देख त्रियोंको अतिगर्भाया ।
हुक्म हैसियत काया माया ख़ाक में रल जायगी ।।१।।
जोवन ज़ालिम जाने वाला,बैरी बुढ़ापा आने वाला ।
काल बली है खाने वाला, मौत निगल जायगी ।।३।।
भक्त शूर ज्ञानी ना दाता,भार सहै पृथ्वी और माता।
'घीसा' कहै जिन्दगी भ्राता सब निष्फल जायगी ।।४।।

* भजन न०–३५ वेश्या गमन *

टेक–वैश्या गमन कर करके मत खोवो ईमान ।।
जो थोड़े लोभ पर सत को, दे देती है इज्जत को ।
उसका क्या अनुमान ।।१।। ठग ठाकुर चोर चमार,
नट कंजर भंगी कहार, ये सबका उगल दान ।।२।।
सब जाति की झूंठी मूंसे,क्या उसके लबों को चूंसे ।
खोकर कुल की कान ।।३।। घर तिरिया अमृत जानो,

रंडी को ज़हर सी मानों,ये खोदे निराश्रय जान ॥४॥
कहै 'घीसाराम' समझाकर,क्या पावो धर्म गंवाकर।
आख़िर हो इन्सान ॥५॥ वैश्या गमन कर२ के मत०

* भजन नं०—३६ मृतक श्राद्ध *

टेक—मृतक श्राद्ध निष्फल है ये वेदों में नाय ॥
झड़—जब जीव निकल जाता है,तब दूजा तन पाताहै।
लिखा ग्रन्थों के मांय, भोगें कर्म का फल है ॥१॥
जो खर की जून में जावे,उसे व्यञ्जन कौन जिमावे।
पोप जी आपो खांय, ये भी तो बहाना छल है ॥२॥
पित्रों को रोग हो जाई, फिर खाते क्यों न दवाई।
नशा करते हिक्चाई, मैथुन में हल चल है ॥३॥
जिन्दों की सेवा करना, ये श्राद्ध चित्त में चरना।
इसी में सब ब्यौ साय, यही श्राद्ध निर्मल है ॥४॥
कहै 'घीसाराम' समझाके,तुम वेद सुनो चित्त लाके।
पट घट के खुल जांय, बढ़ जावें विद्या बल है ॥५॥

* भजन नं०—३७ आर्यसमाज के उपकार *

टेक—बड़े कार्य सारे समाज ने।
शेर(छन्द)कियासत्यका प्रचार,वाकीमहिमाहै अपार,
किये जय२कारे समाजने ॥ कईएक गुरुकुल जारी कराये,

वैदिक यन्त्रालय बनवाये, गुप्त वेद कर प्रगट फैलाये ॥
शेर–बिगड़े हुवे रास्ते को नये सिरे से साफ किया।
धर्म का डंका सारे जहान में बजा दिया॥
परिश्रम करभारे समाजने ॥१॥कन्यापाठशालाकींजारी,
वेद पढ़न लागे नर नारी,धर्मकी मरियादा जो सम्हारी।
शेर–सौ सौ मुसीबतें सत्य मारग में भोग लई।
धर्म को न छोड़ा फिर चाहे अपनी जान गई ॥
यशपालिया प्यारे समाजने॥२॥वेद विरुद्ध मतमें जो नर,
खैंचके ले जाते थे अक्सर,उनको जीता सत्यसे अड़कर ॥
शेर–बिछुड़े हुवे थे बहुत दिन से सो धर्म में मिल गये।
जिस भांति कुमलाये हुवेगुल,आब लगके खिल गये ॥
वेभी तो बिगड़े सुधारेसमाजने,जगह२पर सभा विराजै,
अग्निहोत्र से सुगंधित साजै, ज्ञान के आगे अज्ञान लाजै ॥
छन्द–रोशन हुवे उपकार से, मुनि दयानन्द जहान में।
'घीसा' कहै ना सिफ्त हो कब तक करूं बयान में॥
खोले धर्म के द्वार समाज ने ॥४॥ बड़े कार्य सारे०

* भजन न०–२८ सालाना जलसों के विषय में *

टेक–ये जलसा सालाना मुबारिक हो,क्या खूब२ शुक्र है।
आहा ओहो ये भजनों का गाना मुबारिक होवे ॥

केले के जो खम्ब गढ़ाये, वेदी रचके मन्डप छाये।
वेद मन्त्र स्वरों से गाये, अग्निहोत्र से अति सुख पाये ॥
ये बनकराना मुबारीक होवे ॥१॥ तोरन बन्दरवार विराजें,
ध्वजा पताका कलशे साजें। हंडिया झाड़ फ़नूशे गाजें,
देख सभा की शोभा लाजें ॥ येबाजा बजाना मुबारिक होवे ॥२
बड़े २ यहां सज्जन पधारे, वेद पढ़ें द्विज स्वामी भारे।
बहुत लगे व्याख्यान प्यारे, दर्शन से आनन्द उर म्हारे ॥
इन सज्जनों का आना मुबारिक होवे।३। धन्य २ है सभापति को,
धन्य २ मंत्री चतुरगति को। धन्य २ सभासद जतीसती को,
यह पढ़ना पढ़ाना मुबारिक होवे।४। जलसे से जग का सुधार हो,
सत्यधर्म का जो प्रचार हो। 'घीसा' कहता ताबेदार हो,
भवसागर से बेड़ा पार हो, इस धर्म को फैलाना मुबारिक होवे ॥४

* भजन न०—३६ सीधा मारग *

टेक—सीधे मारग पर आ जावो उलटा बाना छोड़ दो ॥
प्रतिमा पूजन वृथा जानो, घन्टा बजाना छोड़ दो।
सन्ध्या करो इकन्त बैठ कर, कूक मचाना छोड़ दो ॥
पुराण कुरान कहानी किस्से, पढ़ना पढ़ाना छोड़ दो।
सीताराम की लीला रचके, नाच नचाना छोड़ दो ॥
राधेकृष्ण का रास रचाके, मुंह मटकाना छोड़ दो।

अग्निहोत्र करो चित लाके, हुक्का बजाना छोड़ दो ॥
दशों नियम उपनियम सम्हारो, नहीं आर्य कहानाछोड़दो।
'घीसा' कहै भटीपुर वासी, बाद लगाना छोड़ दो ॥

* भजन न०-४० अविद्या नींद से जागाने में *

टेक-तुम भारतवासी प्यारे सोते से जाग जाओ ॥ जी
झड़-पहले अधर्मी राजों ने अधर्म से धर्म बिगारे।
अब तो राजा धर्म का तप रहा घबरावो मत प्यारे ॥१॥
पहले पुराण कुरान की लीला उलटे थे सब काजा।
अब तो वेद चला गये जग में दयानन्द महाराज ॥२॥
पहले और मजहब वालों ने फांसे रचके जाल।
अब तो सो भी आर्य्य हो गये धर्म वीर धर्मपाल ॥३॥
पहले अन्धकार था जग में भुल गये पुरुष तमाम।
अब तो भान उदय वेदों का कहते 'घीसाराम' ॥४॥

* भजन न०-४१ गरुड़ पुराण के विषय में *

टेक-कब तक ना छोड़ोगे ये गरुड़ पुराण ॥
झड़-मुरदों के पिंड भरावो, तन कैसे फेर बनावो।
किस तरह डालो जान ॥१॥ वे जीव और तन धारे,
कर्मों वश भ्रमें सारे। मुर्दों पर क्यों लो दान ॥२॥
सब माल आप ले लेते, मुर्दों को कैसा देते।

करो अपनी गुजरान ॥३॥ नर भोगे अपनी करनी, झूंठी कहते बैतरनी । गौ देते अनजान ॥४॥ है गौ अपनी माता, उसका भी दान ना भाता। देन में है नुकसान ॥५॥ क्यों गया में पिंड भरो हो, कर बांध के माल हरो हो । रचे कैसे तोफान ॥६॥ कहै 'घीसाराम' समझाई, तुम वेद को देखो भाई। होय जिससे कल्यान ॥७॥ कब तक ना छोड़ोगे ये०

* भजन न०—४२ मांस भक्षण खण्डन *

टेक—बिना खता ना मारो जीवों की जान ॥

सुनो मांस के खाने वालो, करो दया जीवों को पालो। साबित रक्खो ईमान ॥१॥ जो मांस खान पर मन गये, क्योंना शेर भेड़िये बन गये। बिल्ली बगुले स्वान ॥२॥ ये है पशुओं का बाना, एक एक को हन हन खाना । तुम हो तो इनसान ॥३॥ जो काटे और के गल को, वो पहुंचे आप कतल को। खोटी छोड़ो बान ॥४॥ तुम हो पशुओं के राजा, रैय्यत मारो हो किस काजा । कहै 'घीसा' अज्ञान ॥५॥ बिना खता ना मारो जीवों०

* भजन न०—४३ पाखन्ड खण्डन *

टेक—जागो कौन नींद सोये जगाय रहें हैं ॥

कोई चोर जार पाजी, कोई करता रंडी बाजी।
कोई जुये का छन्द मचाय रहे हैं ॥१॥ कोई पीता शराब,
कोईकलियाऔरकवाब। कोईसुलफेकी चिलमउड़ायरहेहैं२
कोई प्रतिमा पुजावें, पंडे पुजारी कहावें।
कोई मुफ्ती मालको खाय रहेहैं॥३॥ कोई तीर्थ धामोंजाते,
कोई काबे गिरजा धाते। घंटेशंख झांझको बजाय रहेहैं॥४
गावे 'घीसाराम', रहे भटीपुरे ग्राम।
मानो कर जोड़ २ समझाय रहे हैं ॥५॥ जागो कोन०

* भजन न०-४४ पाषाण पूजा के विषय में *

टेक-पत्थरों को पूज पूज कौन फल पावोगे ॥
जैसी जड़ प्रतिमा पत्थर की, ऐसे जड़ बुद्धि प्यारे
तुम भी हो जाओगे ॥१॥ चैतन्य शुद्ध ब्रह्म को त्यागा,
जड़ भूतों को कब तक सिर नाओगे ॥२॥
ये मूरति है तुम्हारी बनाई, टूटें और फूटें।
फेर तुमही तो बनाओगे॥३॥'घीसा'कहत भटीपुर बासी,
पाखण्ड को छोड़ कब रास्ते पै आवोगे ॥४॥

* भजन न०-४५ गंगा स्नान *

टेक-गंगा के न्हाने से कटते पाप ॥
झड़-ना पाप अग्नि में जलते,जल बीच कभीना गलते।

कैसे भूले आप ॥१॥ गंगा पर विजय कमावें,
सो दूने पाप बढ़ावें । भोगते तीनों ताप ॥२॥
जो जल में डूब मरे है, गंगा ना दया करे है।
वृथा भरें विलाप ॥३॥ जो जल से मुक्ति पाते,
योगी क्यों योग कमाते । जप जप प्रभु का जाप ॥४॥
कहे 'घीसाराम' सुनो प्यारा, ईश्वर का पकड़ सहारा।
करो मत आपा धाप ॥५॥ गंगा के न्हाने से कटते०

* भजन न०—४६ मक्कारों के मकर में *

टेक—लोगों ये मकर तुम्हारे हम जान गये ॥
कोई पांडे और पुजारी, प्रतिमा रच न्यारी न्यारी।
पोपों के लग रहे लारे ॥१॥ कोई पोथी पत्रा लावें,
कोई ऊंगलीपै ग्रह बतावें । बड़ेआये शनिश्चर भारे॥२
कोई सन्ध्यामें कसरतकरता, घुटनोंऊपर कर धरता ।
कोई हक हक्के बोले नारे॥३॥कोई मुर्दोंपर धनलेता,
कोई झूंठे धोके देता, कोई मृतक श्राद्ध उचारे ॥४॥
कहे 'घीसाराम' सुनो पढो वेद मुक्ति हो जाई ।
हम बरजत बरजत हारे ॥५॥ लोगों ये मकर०

* भजन न०—१७ शराब मे *

टेक—है शराब दुखदाई मत पीवो भूल ॥

ये पागल कर डाले है, धन खोवे घर घाले है।
पेट में कबज़ी शूल ॥१॥ कै करै हो खफ़खानी,
गिरे पड़े बकै अज्ञानी। होय प्रजा में धूल ॥२॥
ये नशा दुःख का दाता है, पत खोकर पछताता है।
लुटावो माल फिजूल ॥३॥ कहै 'घीसाराम' कहा मानो,
ऐसे अधर्म ना ठानो। काहें को बोते बबूल ॥४॥

※ भजन न०—४८ पाखन्डियों के पाखन्ड में ※

टेक—कौन ये धर्म है प्यारे मूंड का हिलाना ॥
सेढ़ सीतला भैरों मसानी इनकी जोत जलाना।
अंगरोगको खोड़ बतावो, काट२ बकरेमुर्गे जोतपर चढ़ाना१
देवी चन्डी पीर कालका लंकड़ और हनुमाना।
सेवाभर२ बने देवता, मूर्खोंमें धंसकेये पाखंडला मचाना।।२
बकरे बोतल पान मिठाई, लौंग वो हलवा खाना।
जीवकेबदले जीवमारके, कैसेभलाहोगा खावोकरकेबहाना३
आपही नाचो आप ही कूदो, आपही माल उड़ाना।
'घीसा' कहै देवता कितने हैं पूछना तो चहिये बहका
फिरे क्यों जमाना ॥४॥ कौन है धर्म प्यारे मूंड०

※ भजन न०—४९ जमाने की तरक्की ※

टेक—देखो देखो रे भाईयों कैसा भला जमाना आया ॥

जगह जगह पर वेद बचें हैं विद्या का प्रचार।
दयानन्द ने भारत वासी डूबत लिये उभार ॥१॥
सिंह और बकरी एक घाट पर निशदिन पीते पानी।
सत्य विद्या का प्रकाश हो गया दूर भई हैरानी ॥२॥
वैदिक धर्म करो अब धारण, उलटे मारग त्याग।
गफलत की निद्रा को दूर कर सोते उठो जाग ॥३॥
नियम,धर्म मर्याद चलाओ अब लो जन्म सुधार।
हाथ जोड़ के करै निवेदन 'घीसा' ताबेदार ॥४॥

❊ भजन न०—५० गौ रक्षा ❊

टेक—सुनो अर्ज करती है गौवों की पुकार ॥
झड़—घी दूध से जग को पालें,बिन खता मारक्यों डालें। पशु हम ताबेदार ॥१॥ बन घास को चरने वाली, बिन मौत से मरने वाली। हमें दुख हुआ अपार ॥२॥ हम से ही खेती कमावें, मरतें भी चरम दे जावें। पावते सुख नर नार ॥३॥ जब हम को मार धरोगे, काहे से खेती करोगे। कुछ तो करो विचार ॥३॥ जो हम पर रहम करेगा, वो सुख आनन्द भरेगा। होय भौसागर से पार ॥५॥ हम लगा रहे आस तुम्हारी, तुम बकसो जान हमारी, काहे को रहे बिसार ॥६॥

कहै 'घीसाराम' ये अर्जी, सुनलो तो आपकी मर्जी।
बड़ा भारी उपकार ॥७॥ सुनो अर्ज करती हैं गौवों०

※ भजन नं०-५१ चुप ताल में ※

टेक-कोई दिन रात हांडले गलियां ॥
धन्य माली जिन बाग लगाये, फूलबेल शोभा पर आये।
लहर लहर बिरुवे लहराये, खिलन लगीं कलियां ॥१॥
बागबान तोड़न आता है, सारा गुलशन चिल्लाता है।
खिले खिलों को ले जाता है भर भरके डलियां ॥२॥
आज तोड़ लिये फूले फूले, कल परसों में चुग हसकू ले।
काल हिंडोले में अब झूले, ना छोड़े मलिया ॥३॥
ऐसे बाग बहुत से मारे, इसका गर्व करे मत प्यारे।
'घीसाराम' प्रभु गुण गारे, समझ काल बलिया ॥४॥

※ भजन नं०-५२ पंडितों के लक्षण ('विदुर नीति) ※

दोहा-विदुर भक्त कहने लगे, हित करके नृप नीत।
धृतराष्ट्र सुनने लगा, लगी ज्ञान से प्रीत॥
टेक-सो पण्डित कहलाता है धर्मज्ञ शील गुणवन्त है॥
ख्याल-जीवआत्मा अरु परमात्मा इनदोनोंका ज्ञानीहो।
शुरू करे अच्छे कार्यों को सहन शील जो प्राणी हो॥
नित्य धर्म काहो अर्थ करता लोभ नहीं गुणखानी हो।

नेकी करे बदी को त्यागे ना क्रोधी अभिमानी हो ॥
झड़–ना स्वपन नास्तिक होवे, नर वैदिक धर्म संजोवे ।
ईश्वर को नहीं बिसारे, शुभ कर्मों में चित्त धारे ॥
तोड़–धैर्य लज्जा क्रोध हर्ष रिपु अहंकार बलवन्त है ।
इनसे मार खाता है, ना अर्थ भ्रष्ट पाता है ॥१॥
ख्याल–जिसके विचार कियेभये कार्य, कोई नहीं जानताहै ।
सिद्ध भयों को सब कोई जाने ऐसी मन में ठानता है ॥
शीत उष्ण उर काम काज जिसको नहीं बिसानता है ।
धनिता निर्धनता में डिगे ना दूर रहे अज्ञानता है ॥
झड़–जिसकी बुद्धि अति चेती, चले धर्म अर्थ के सेती ।
ना काम करे चित्त धरता है, सो अर्थ ग्रहण करता है ॥
तोड़–यथाशक्ति से करे सोचता मतलब बैठ इकन्त है ।
ना किसी को बिसराता है अपमान नहीं चाहता है ॥२॥
ख्याल–सुने देर तक जल्द जानले तजकर काम अर्थ सेवे ।
काज बिराने में बिन पूछे बोले ना उत्तर देवे ॥
ना मिलने वाली वस्तु की इच्छा करे न दुःख खेवे ।
नष्ट भये का सोच करे ना संवर समझ कर लेवे ॥
झड़–निश्चय कर काज अरंभे, ना विघ्न पड़े पर थंबे ।

विपता में ना घबराता, ना समय वृथा जो जाता ॥
तोड़—मन को बसकर मगन रहै जिस तरह ध्यानमें संतहै।
उसे श्रेष्ठ कर्म भाता है, उन्नति में हर्षाता है ॥३॥
ख्याल—आदरसे प्रसन्न न होवे, दुःखी न होय निरादर में।
किसी के हितकी करे ना निन्दा उत्तम लक्षण हो नरमें ॥
सब प्राणियों के तत्व को जाने कभी न चूके अवसर में।
सर्व कार्य जानन हारा चित्त धरो परमेश्वर में ॥
झड़—जो मनुष्य रंक अमीर, सबकी जाने तदवीर।
हो प्रवृत जिसकी बाणी, कहने में थके ना प्राणी ॥
तोड़—चाहें जितना कहें अनोखा नई २ बात तुरन्त है।
ग्रंथों को जल्द गाता है, नये नयों को दर्शाता है ॥४॥
ख्याल—वेद शास्त्र जिसकी बुद्धि के पीछे हों चलने वाले।
बुद्धि होय उन्हीं के पीछे दौड़ जाय तो तत्काले ॥
श्रेष्ठों की मरियाद न तोड़े रक्षा कर २ प्रण पाले।
रोचक और भयानक तजके संग यथार्थ के चाले।
झड़—गुरु सेढूसिंह गुण गाते, ये विदुर भक्त समझाते।
सुन धृतराष्ट्र चितलाके, कहूं राजनीति समझाके ॥
तोड़—'घीसा' कहै भटीपुर बासी, नहीं ज्ञानका अन्त है।
सुनलो जैसा आता है, गुणियों को सिर नाता है ॥५॥

* भजन नं०—५३ मूर्ख के लक्षण *

दोहा—विदुर ऋषि बोले बचन, धृतराष्ट्र सुन लेय ।
मूर्ख के लक्षण कहूं, कान लगा चित्त देय ॥
टेक—मूर्ख के लक्षण राजा तू सुनले कान लगायके ॥
ख्याल—पढ़ा नहीं बेहोश जौन आपेको पण्डित मानेहै ।
दरिद्री हो के बड़े मनोरथ अपने मन में आने है ॥
बिना कर्म अर्थों को चाहे ऊंच नीच ना जाने है ।
अपने अर्थ को छोड़ दूसरों के में अटकना ठाने है ॥
झड़—मित्रों से प्रीत हरे है, मिथ्या आचरण करे है ।
है श्रद्धा रहित जो भ्राता, कार्यों को करना चाहता ॥
तोड़—श्रद्धा वाले कार्य्य छोड़े बली से बैर बिसायके ।
सब बिगड़ जांयगे काजा ॥१॥
ख्याल-जो अमित्र से करे मित्रता मित्रसे बैर बिसावे है ।
करता फिरे दुष्ट कर्मों को मूर्ख सो कहलावे है ॥
कार्य्यों कू तो बहुत फैलाता शंका कर घबरावे है ।
जल्द करन के काम जौन से उनमें देर लगावे है ॥
झड़—पित्रों की करे ना सेवा, तज पांच यज्ञ सुखदेवा ।
खोटों की संगत करना, अच्छों को देखत डरना ॥

तोड़—सो मूर्ख है जग के अन्दर,सोच करे पछतायके ।
ना तनक लोक की लाजा ।।२।।
ख्याल—बिना बुलाये जो कहीं जावे,बिन पूछे बोले अज्ञान ।
अविश्वासमें विश्वास करता अधम पुरुषताको पहचान ।।
दूसरों को करे दोष से दूषित आप उसीमें फंसा अज्ञान ।
बिना समर्थी क्रोध करे है उस मूर्ख का क्या अनुमान ।।
तोड़—अनमिलते से मिलना चाहे, जगमें लोग हंसायके ।
वृथा ही फिरे नर भाजा ।।३।।
ख्याल—अशिष्यको शिक्षादेता जोशून्यकी करे उपासनाहै ।
निन्दित स्वामी की करे सेवा कैसे भोगे वासना है ।।
उल्टे उल्टे काम करे कुछ बुद्धि ज्ञान क़यास ना है ।
खाली घर में जाय मंगता उससे कोई आस ना है ।।
झड़—गुरु सेढूसिंह गुण गाये न्यू विदुर संत बतराये ।
मूर्ख का हाल कहा है, कहना कुछ और रहा है ।।
तोड़—विदुर नीति के छन्द कहे हैं'घीसाराम'बनायके ।
स्वर साथ बजावो बाजा ।।४।।

* भजन न०—५४ पंडितों की महिमा *

दोहा—बहु धन विद्या ज्ञान हो, बहुत प्रभुता पाय ।
तज घमण्ड विचरे पुरुष पंडित सोय कहाय ।।

इकला छोड़ कुटम्ब को उत्तम भोजन खाय ।
उत्तम पट धारण करे निन्दित सोय कहाय ॥
ख्याल-एक पाप से ल्यावें पदार्थ साथी भोग लगाते हैं ।
ओगन वाला छूट जाय कर्ता के सिर पर जाते हैं ॥
धनुष से छोड़ बाण एक को मारै तुम्हें बताते हैं ।
बुद्धिमान् से बुद्धि छोड़ी राज्य देश दुःख पाते हैं ॥
एक बुद्धि से सत्यासत्य दो जानके जग यश छाते हैं ।
साम,दाम और दण्ड भेद चारोंको चित्त में लाते हैं ॥
नियम और यम आसन दृढ़कर प्राणायाम कमाते हैं ।
काम क्रोध और लोभ तीन को वशमें कर हर्षातेहैं ॥
पांच इन्द्रियां जीत छटे संधिग्रह लाभ उठाते हैं ।
कहै'घीसा'फिर धर्म सातवां सुखी होय गुण गाते हैं ॥
टेक-जन विदुर नीति गाते हैं राजन सुन बात विचारकी ।
ख्याल-विष रस एक पुरुष को मारे शस्त्रसे भी एकमरे ।
मन्त्र बिगाड़ राज्य नृप पृथ्वी सब प्रजाको मार धरे ॥
सब कुनबे से न्यारा भोजन कभी अकेला नहीं करे ।
सोते हुओं में जगे ना इकला मारग में भी ना बिचरे ॥
झड़-ना इकला मन्त्र बिचारे, सल्लाह से कार्य धारे ।
है सत्य धर्म का मौका,ये विश्व सिन्धु की नौका ॥

तोड़-नहीं जानते तुम उस सत को,ठाम दई तकरार की,
सुझे येही सोच आते हैं ॥१॥
ख्याल-क्षमावान पुरुषोंमें बढ़ेगुणएक दोष जानत शठखल ।
जब वो करते क्षमा जानते शक्ति हीन छोटा निर्बल ॥
नहीं दोषसे मानना चाहिए, सबसे श्रेष्ठ क्षमाका फल ।
अशक्त का तो क्षमा ही गुण है बलियोंका भी भूषणभल ॥
झड़-है क्षमा की जोत निराली,जगको वश करनेवाली ।
क्या होता नहीं क्षमा से, सब सुधरे काज सदा से ॥
तोड़-कोई दुष्ट ना चोट सहै इस भांति रूप तलवार की,
सन्मुख ना डटने पाते हैं ॥२॥
ख्याल-घासफूस जहांनहीं वहांपर अग्निआप बुझजातीहै ।
क्षमा होय जिस नर के धोरे सबको बस में लाती है ॥
पर धर्म कल्याण क्षमायक उत्तम शान्ति कहाती है ।
विद्या ही एक पर तृप्ति अहिंसा सुख पहुँचाती है ॥
झड़-जिस बिलमें रहने वाले,अहि मूसे आदि को खाले ।
ऐसे ही पराक्रम हीन, कोई राजा हो प्रवीन ॥
तोड़-घर बैठे भूमि खा जावो दुर्गति हो लाचार की ।
आलस्य कर पछताते हैं ॥३॥
ख्याल-गुणबिन पंडितराजानर,इनकी घरमें रहेसेहान ।

भूखे मरें बैठ के खावें, कोय न करता आदर मान ॥
मीठा बोलने वाला जगत में सदा होत है शोभावान ।
नारी और जो पूजित कहिये ये दोनों निश्चय से जान ॥
झड़—जो वृथा बदन सुखावें निर्धन सुख को ललचावें ।
क्रोधी हो अन अधिकारी, दोनों को समझ अनारी ॥
तोड़—किस विध होय मनोरथ पूरा मत मारी नर नारकी,
'घीसा' यूं समझाते हैं ॥४॥

* भजन नं०—५५ *

दोहा—गृहस्थ कार्य ना करे, भिक्षुक करे बनाय ।
वेद विरुद्ध उभय नर, शोभा रहे नसाय ॥
ख्याल-ऐश्वर्य वाला क्षमा मुक्त हो और दरिद्री दान करे ।
ये दोनों जाते हैं स्वर्ग को नीति न्याय ऐसे उच्चरै ॥
अयोग्य में दे योग्य में नादे उलटे पन से विपत भरै ।
कुठौर में जो द्रव्य लगावे होय दुर्दशा आप मरै ॥
धनवान होकर दान न देवे दरिद्री हो तपहीन फिरै ।
दोनों के गल बांधे पाथर, जल में बोरत नहीं डरै ॥
संन्यासी योगाभ्यासी हो, युद्ध में मरने वाला न डरै ।
इन दोनों का जग यश छावे, कहै 'घीसा' न बचन टरै ॥
टेक-सुन राजनीति की बाणी अज्ञान भर्म को दूर कर ।

ये विदुर भक्त की वाणी ।।

ख्याल-तीन तरह के पा। जगतमें गुरुओं के कहलाते हैं ।
उत्तम मध्यम निकृष्ट इनको वैदिक वेद जनाते हैं ।।
तीन तरह के मनुष्य जगत में तीनों पाप बढ़ाते हैं ।
तीनों के हैं तीन भेद सो पापी पाप कमाते हैं ।।
झड़-बेटा नारी और दास, ये पराधीन हैं खास ।
जावें जो पास किसी के, इनके धन होय किसी के ।।
तोड़-पिता पति स्वामी बस रहते उनके हुक्म मंजूर कर,
ताबे यह तीनों प्राणी ।।१।।

ख्याल-परधन को चोरीसे लेना परनारी से करना संग ।
मित्र छूटना तीनों दोष ये नास करन वाले बे ढंग ।।
काम क्रोध और लोभ ये तीनों नाश करन्ते करदें तंग ।
नर्क द्वार तीनों को त्यागे अच्छों का कीजे सतसंग ।।
झड़-कर देना राज्य का देना, घर जन्म पुत्र का लेना ।
तीनों को तुल्य यक जाना, दुख से रिपु जाय छुड़ाना ।।
तोड़-अवगुण ऊपर गुणका करना, दिलसे अलग फ़तूरकर,
ये सांची बात बखानी ।।२।।

ख्याल-भक्त औरजो सेवक अपना शरणागत कोई आवे ।
इनको आपत्ति में ना छोड़े तो दुनियां में यश पावे ।।

महाबली राजों को वर्जित चार बात श्रुति गावे ।
थोड़ी बुद्धि वाले से सम्मति स्वप्ने में भी ना पावे ॥
झड़—आलस्य धरने वाले से, जल्दी करने वाले से ।
अरु डोम भाट हो कोई तारीफ़ उड़ावे जोई ॥
तोड़—इन चारोंसे विचार न करना,इतना समझ सहूरकर,
चाहे राजा हो या रानी ॥३॥
ख्याल—गृहस्थके आश्रमसे प्यारे कितनोंही का गुज़ाराहो ।
भाई आदि कुटम्बी बूढ़ा दुःखी बहन कोई प्यारा हो ॥
दुर्बल और कुलीन दरिद्री अन्धा रोगी हारा हो ।
इतने रहें आसरे घर में कभी न करे किनारा हो ॥
झड़—सुरपति गुरु भये राजी,कही चार बात जो ताजी ।
तो सुनले राजा ज्ञानी, कहता हूँ परम समानी ॥
तोड़—'घीसा' कहै भटीपुर वासी,समता सुमति ज़रूरकर,
ईश्वर की स्तुति ठानी ॥४॥

* भजन न०—५५ *

दोहा—चारों बातें अब सुनो, राजन् चित्त लगाय ।
निर्मल वाणी विदुर की, कहते हैं समझाय ॥
टेक—नृप नीति सुनो चित धरके अज्ञान दूर हो जायगा ॥
ख्याल—एक है विद्वानोंका संकल्प अनुभवी बुद्धिमानों का ।

विद्या पढ़ौं का विनय तीसरा नाश दुष्ट अज्ञानों का ॥
प्रमाण से करे अग्निहोत्र, अरु होना मौन विद्वानों का ।
प्रमाण ही से पढ़ना यज्ञ कर धारण चार समानों का ॥
झड़–ये चार कर्म भय हरते, उलटे भ्रम पैदा करते ।
फिर पांचका सेवन करना, पितृ मात अग्नि गुरु चरना ॥
तोड़–पांचवां जान आत्मा अपना, सेवा से हरषायगा ।
हो नाश क्लेश को करके ॥१॥

ख्याल–तेरे पीछे पांच चलेंगे मित्र शत्रु मध्यस्थ सुघर ।
जिसके आश्रय पर तू जीवे तेरे आश्रय जिये जो नर ॥
पांच इन्द्रियों वाले पुरुष के छिद्र एक भारी चित धर ।
चर्म डोल से टपकत पानी ऐसे इसे खयाल कर ॥
झड़–उन्नति चाहने वाला छः दोष तजै तत्काला ।
निद्रा तन्द्रा को त्यागे, अरु क्रोधालस्य से भागे ॥
तोड़–दीर्घसूत्रता सुस्ती त्यागे ना सिर धुन पछतायेगा ।
सब प्रभुताई को हरके ॥२॥

ख्याल-आचार्य्य बिनपढ़ानेवाला, बिना पढ़े ब्रह्मचारीको
राजा जो रक्षा ना करता, कडुवी बोला नारी को ॥
ग्राम में रहने वाले गोप को, बन के नाई बारी को ।
इन छः को छोड़े जिसमें, टूटी नाव बिचारी को ॥

झड़—क्षमा धैर्य सत्य अरु दाना, आलस्य निन्दा बिसराना ।
इन छः को त्यागे नाहीं, राखै हृदय के माहीं ॥
तोड़—इन छःओं को धारण करके, जगयश पाप नसायगा,
फिर जाय स्वर्ग में मरके ॥३॥
ख्याल—धनकी आमदबदन निरोगी, त्रियाप्यार करनेवाली
अर्थ सिद्ध बेटा हो वश में, विद्या लाभ धरने वाली ॥
ये छः सुख हैं जग के अन्दर, सभी विपत टरने वाली ।
पांचों इन्द्री मन छटाहो वशमें बुद्धिक्रोध हरने वाली ॥
झड़—जो इन्द्रियजीत नर हो है, वो धर्म मुक्त अति सोहै ।
पापों के वश में न आता, ना उसे अनर्थ सताता ॥
तोड़—'घीसा' कहै भटीपुर वासी गोविन्द गुण मन भायगा,
चल पोच कर्म से डरके ॥४॥

* भजन न०—५६ *

दोहा—विदुर भक्त बोले बचन सुनो भूप गुण रास ।
छः नर छः में जीव से नहीं सातवां पास ॥
सवैया-चोरजियेंजहां बेसुधहो, अरुवैद्यजियें जहांरोगसतावें
नारजियेंजहांकामी पुरुषअरु याचकचल यजमानपैआवै ॥
राजा जिये झगड़ालूओं अन्दर पंडित मूर्खों को नरमावै ।
'घीसा' कहैगुणिलोगजियेंजहां ज्ञानकीचर्चाहो ज्ञानकोगावै

टेक–छः बिगड़ जात हैं प्यारे बेहोशी के प्रमाद से ।।
एक मौज दूजे पर सेवा तीजे खेती बुरा हो नेवा ।
चौथे स्त्री रेड़ की लेवा, खुद मुख्तार फ़साद से ।।
कर देती वारे न्यारे।।१।।विद्या बिल्कुल बिगड़ जातहै,
साथ नीचका बुरी बात है । इनमें चेतना दिनों रातहै,
कहते आये आदि से ।। जो गाफ़िल है सो हारे ।।२।।
और सुनो छः कहूं निराले,उपकारियोंके त्यागनवाले ।
विद्या पढ़के शिष्य रिज़ाले,अलग होंय उस्ताद से ।।
माता से स्त्री बारे ।।३।। काम नष्ट भय त्यागे नारी,
अर्थ सिद्ध भय त्यागेयारी,जलको तरके नाव विचारी,
वैद्य रोग गये बाद ।। 'घीसा' ने छन्द उचारे ।।४।।

* भजन न०–५७ *

दोहा–फेर विदुर जी ने कही,न्याय नीति समझाय ।
धृतराष्ट्र सन लीजिये, निश्चय कान लगाय ।।
ख्याल–हे राजाइस जग अन्दर छः सुख भारी हम कहते ।
एक शरीर अरोग्य होय फिर दूजे बिना करज रहते ।।
तीजे नहीं विदेश में जाना अपने देश सुक्ख लहते ।
चौथे सत्पुरुषों से मेल हो सो नर कभी न दुख सहते ।।
पांचवें मन अनुकूल जीविका छटेंनिडर रिप ना कहते ।



सेढ़ू का चेला कह 'घीसा' पूरे गुरु के पद गहते ।।
टेक–सुन नीति और समझावें जो बात यथार्थ ज्ञानकी ।
विदुर भगत नीति समझावें ।।
ख्याल–नित्यदुखी इसदुनियामें उनकेहाल सुनोचितलाय ।
एक ईर्षा करने वाला दूजा दयालु दुखी कहाय ।।
तीजा बेसबर चौथा क्रोधी पांचवां शोकी दियाबताय ।
छटा दूसरे के आश्रय से जीता जौन सहारा पाय ।।
झड़–हैं सात दोष जग अन्दर त्यागे तो धर्म धुरन्धर ।
व्यसनों को पैदा करते, उन्हें छोड़ दुख भरते ।।
दौड़–त्रियोंकेसाथगमन करना,खेलपांसेशिकारसे डरना ।
कटु वाणी मदिरा पीना, कठिन जो दण्ड बज्र सीना ।।
तोड़–सातवां धन का बिगाड़ देना ये बातें नादान की,
सातों को छोड़ सुख पावें ।।२।।
ख्याल–नाशहोन वाले के पहले कारण आठ सुनो चितसे ।
एक बैर ब्राह्मण से,दूजे विरोध ठान बिना हित से ।।
तीसरे उनके धन को लेना, चौथे मगन पराजित से ।
पांचवें निन्दा सुने खुशीहो,होविपरीत अलग चितसे ।।
झड़–सुन छटा ये कारण प्यारे,द्विज प्रभुतासे दुख भारे ।
कार्य में जो न बुलाना, कुछ मांगे तो नट जाना ।।

दौड़—त्यागदेचतुरयेआठों दोष,सुखीहोकर दिलमेंसंतोष ।
नीत पर जो नर चलतें हैं, बड़े सुख पाकर फलते हैं ।।
तोड़—जोनर करतकुनीत,उन्होंकी सफलफ़क्त इन्सानकी,
सो पशु बिन पूछ कहावें ।।३।।

ख्याल—और आठ सुख हैं इसमें प्रथम मित्रोंसे मुलाकात ।
दूछे बहुत से धन का आना,तीजे सुखसे मिलना तात ।।
चौथे निज स्त्री से मैथुन, पंचम प्यारा बोले भ्रात ।
छटे उन्नति होय समूहमें सप्तमचाही वस्तु मिलजात ।।
झड़—अष्ठम हो जग में आदर,खातिर जो करे बिरादर ।
ये आठों सुख बतलाये, जिन दूध सार घी गाये ।।
दौड़—आठगुण औरसंशोभितहैं,पुरुषको करे प्रकाशितहैं ।
एक तो बुद्धि दूजे कुल, रोकना इन्द्रिन का निधपुल ।।
तोड़—चौथे वेद का पढ़ना उम्दा हो महिमा गुणवान की,
पंचम पराक्रम बतलावें ।।४।।

ख्याल—छटासुनों गुणथोड़ाबोलना,सप्तमयथाशक्तिदेदान
आठवें जोउपकार कियेभये उनको भी तनमनसे मान ।।
नौ द्वारे हैं इस शरीर में तीन थम्भ तीनों गुण जान ।
पांच इन्द्रियां साक्षी तनमें जीवरहे जिसके दरम्यान ।।
झड़—हैं चतुर पुरुष अति स्याने,जो भेद देह के जाने ।

अपना आपा ना जाने, सो और को क्या प चाने।
दौड़—ध्यान गुरु से ढूंसिद्धकाधर, खोल हृदय को ख्याल तो कर।
गावे तो विदुर नीति को गा, नाम दंगल के अन्दर पा॥
तोड़—'घीसा' कहै भटीपुर वासी, छोड़ बाण मद मान की,
इनसे मानस ज्ञान नशावे ॥५॥

* भजन न०—५८ *

दोहा—इस दुनिया के बीच में, दश ऐसे हैं तात।
नहीं धर्म को जानते, करें अधर्म ही की बात॥
टेक—दश ऐसे हैं प्रजा में जो नहीं धर्म को जानते।
एक बेहोश नशे को करके, दूजा धनादि मद में भरके॥
तीजा रोगी होश बिखर के, ये अधरम को ठानते।
ना अपने दिल को थामें ॥१॥
चौथा थका पांचवां क्रोधी, छटा जो भूखा उसे न सोधी।
सातवां है जल्दबाज़ विरोधी, सांची बात बखानते॥
ये विचल जात लहमों में ॥२॥
आठवां लोभी लोभ का मारा, नौवां है डरपोक विचारा।
दसवां कामी धर्म का हारा, पाप करे मन मानते॥
सो सत्य सत्य कहता मैं ॥३॥
इनसे बिलकुल मेल न कीजे, चातुर सोच समझ तज दीजे।

'घीसाराम' राम रट लीजे, ज्ञान भजन पहचानते ।।
नर भजले रामे राम ।।४।।

* भजन नं०—५६ *

दोहा—पुत्र हेत प्रहलाद ने, झूंठा ना बोले बोल।
सत्य सुधन्वा से कही, सुन नृप कथा अनमोल ।।
ख्याल—कामक्रोधमद छोड़के जोनरदेने योग्यमेंदानको दे।
पढ़ा और असलियत को जाने शीघ्र कार्य्योंको करले ।।
उसकी बात को संसार जाने कर्म करे जो नीति के।
सेढू का चेला कहै 'घीसा' भारत के पद सुनलो ये ।।
टेक—राजा मैं तुझे सुझाऊं जो राज्यनीत की बात है ।।
ख्याल—जोनृप मनुष्यकोहितसेविश्वासदिलानाजानताहै।
वेद जानने पर दोषित को दंड का देना ठानता है ।।
जो प्रमाण और क्षमा को जाने धर्माधर्म पहचानता है।
उसकी करत लक्ष्मी सेवा ऐसे वेद बखानता है ।।
झड़—दुर्बल को दुखना देता युक्ति से बुद्ध को सेता।
कृपा से बुद्धि चित्त मन से बर्ताव करे दुशमन से ।।
दौड़—बहुतबलवानसेयुद्धबिसायसमयपरपराक्रमदिखलाय
विपत जब पड़े कोई आके, नहीं घबरावे दुःख पाके ।।
तोड़—जैसी समय बिचारे उसकी सभी विपत टलजातहै,

असली सो भेद बताऊं ॥१॥

ख्याल–आलस्यत्यागउद्योगको करतासमयपड़े दुखसहताहै

वही उठाने वाले भार का सुख दुख दोनों लहता है ॥

धन्य महात्मा ज्ञानी सो नृप सत्य मार्ग को गहता है ।

जीत शत्रुओं को वश करले विधि पूर्वक कहता है ॥

झड़–ना अनर्थ मन पै थर्पे, रहै सावधान नित घर पै ।

पापों के मेल से भागे, पर नार सेवनी त्यागे ॥

दौड़–और चुगलीचोरी पांखड,मद्यकापान बिसार घमंड ।

हमेशा सोई रहैगा सुखी,विषय को त्याग होयना दुखी ॥

तोड़–सत मर्यादा को कर धारण हो जग में विख्यात है,

उसको उत्तम ठहराऊं ॥२॥

ख्याल–धर्मकर्म औरकामको जल्दीबिना विचारेकरेनहीं ।

पूंछे से कहै असली बातको खोटी चित्तमें धरे नहीं ॥

मित्र के साथ विवाद करै ना बिना वजै के लरे नहीं ।

पाके अनादर होय ना क्रोधित बुद्धिमान हो डरे नहीं ॥

झड़–फिरदेख सखी किसीनरको,होताना जलनसुधरको ।

दुर्बल से बैर ना करता जो बहुत बोलते डरता ॥

दौड़–सभीसहलेतावाद विवाद न लाताक्रोध नहीं प्रमाद ।

पुरुष वो सबको भाता है, बड़ाई सर्वत्र पाता है ॥

तोड़—ये लक्षण हैं बुद्धिमान् के, दुष्ट करे उत्पात है।
नर ओछों से शर्माऊं ॥३॥

खयाल-जोकभी वेषघमंडीअपना, किसीसमय न करेप्यारे।
अपने पुरुषार्थ की आप आपको कभी बड़ाईना मारे॥
थोड़ी भी ना कड़वी बात कहै मीठी बाणी उचारे।
सदा प्यार का बर्ताव जग में, पराक्रम चहै हो भारे॥
झड़—जो शांति भई रिपुता को, प्रज्वलित करे न जाको।
करता घमण्ड ना जोय, सोय नाश को प्राप्त होय॥
दौड़—बली होके कहै दुर्बल हूं, बड़ानाचीज़ मलामल हूं।
कभीदुष्ट कर्मना मनमें ठाने, श्रेष्ठ शुचि आर्य माने॥
तोड़—'घीसा' कहै भटीपुर वाली, विदुरनीतिकथगात है,
उद्योग पर्व को गाऊं ॥४॥

* भजन न०—६० *

दोहा—सबके सुख में मग्न हो, अपने ही में नाहिं।
दूजों के दुख देखके, खुश ना हो मन मांहि॥
खयाल-देकर ना पछताय नरों में आर्य शील कहाता है।
समय और जाति के धर्म से व्यवहार श्रेष्ठ फैलाता है॥
आदि अन्त जानन वाला जहां तहां भी जाता है।
श्रेष्ठ मनुष्यों के ऊपर जो राज्य करे सुख पाता है॥

धर्मों के अनुसार चाले से प्रजा में यश छाता है।
सेढू का चेला कहै 'घीसा' विदुर नीत को गाता है॥
टेक—जो उत्तम कर्म करेगा सो साधु पुरुष कहावता॥
ख्याल--विद्वान जो द्वेशको त्यागे पाप कर्म अभिमान तजे।
नृत से द्वेष ईर्षा चुगली ईश्वर की पहचान तजे॥
किसी समूह के साथ न रिपुता दुष्ट वैरको जान तजे।
मतवाले अभिमानी खोटे इनका संग कर ज्ञान तजे॥
झड़—नित्य दान प्यार सुर पूजा शुभ कार्य्य ठाने दूजा।
पापों की करता शुद्धि, फिर ज्ञान से निर्मल बुद्धि॥
तोड़—तरह २ की बात चीत संसारी कर दिखलावता,
सो उन्नति काज सरेगा॥१॥
ख्याल—ब्याह मिलना बातचीतजो करता पुरुष समानोंसे।
अच्छों के कहने को माने दूर रहै अज्ञानों से॥
उस पण्डित की नीति अच्छी चलती कर्म विधानों से।
कह के वचन करे जो पूरा दूर रहे तोफानों से॥
झड़—अपने आश्रितों के साथ, जो पुरुष बांट कर खात।
खोला रे वह कर्मन को, मांगन से देत रिपुन को॥
तोड़—ज्ञानवान करे प्रमाणों से तासे अनर्थ नशावता।
अरथों से खूब भरैगा॥२॥

ख्याल–जो सबप्राणियोंकीशांतिमें शामिलहोतातनमनसे।
सत्यवादी मृदु बोलन वाला शुद्ध हियासब पुरुषन से ।।
बीच कटु के ऐसे शोभित जमे चांद निकसा घन से।
मान योग्यों का करनेहारा सबकुछ सधता उस जनसे ।।
झड़–जो अन्तःकरण को धोता,पापों में लज्जित होता।
वो गज का गुरु कहावै, प्रसन्न चित्त मन भावै ।।
तोड़–भान तेज के तुल्य प्रकाशित सावधान हर्षावता।
तेजस्वी हो विचरैगा ।।३।।
ख्याल–हे धृतराष्ट्र शाप दग्ध नृप पांडु के सुत पांचभये।
पालन पोषण किया आपने शिक्षित कर आनन्द छये ।।
आपकी आज्ञा मानके पांचों योगी बनके निकल गये।
बनवास करत हैं विचारे क्यों अपयश जग बीच लये ।।
झड़–दे दे पांडव को राज,तुर्त सम्मान न कोई आज।
पुत्रों के साथ कर मेल, तज दे खोटे ये फेल ।।
तोड़–सेढू का चेला कह 'घीसा' भाषा छन्द बनावता।
कर्ता का ध्यान धरेगा ।।४।।

* भजन न०–६१ *

दोहा–धृतराष्ट बोले वचन सुनो विदुर जी बात।
राज्यनीत हमसे कहो, किस विध हितहो तात ।।

टेक—तुम विदुर भक्त ज्ञानी हो ना होय बड़ाई आपकी ।।
जगतहुयेऔर जलतेहुओं का, विपतकेअन्दर रलतेहुओंका ।
चाहो भलाकर मलते हुयों का, जड़ काटो इस पाप की ।।
मुश्किलसे आसानी हो ।।१।। धर्म अर्थमें आप कुशल हो ।
जैसे जलोंमें गंगाजल हो, पण्डित गुणी भक्त निर्मल हो,
छाई कला प्रताप की ।। ईश्वर में परम ध्यानी हो ।।२।।
कहो यथार्थ सब सुधार को, हितकारक अति सुन्दरकारको,
धर्म युधिष्ठर के विचार को, बातें मेल मिलाप की ।।
जिससे ना हैरानी हो ।।३।। अन्धों में शंका करने वाला,
पापों में चित्त धरने वाला । पूंछता हूँ मैं डरने वाला,
समझ के सतुल्य आप की, सुन 'घीसा' की बानी हो ।।४।।

* भजन न०—६२ *

दोहा—विदुर भक्त बोले वचन, सुनो चित्त दे भूप ।
वाणी अमृत की भरी, सुन्दर नीत अनूप ।।
ख्याल—विदुरकहें सुनभूप आदमी जिसकीबुराई नाचाहे ।
बिन पूंछेशुभ अशुभभी कहदो द्वेषप्रियकुछ भयनाहै ।।
कौरव का हितकारी वचन ये कहता हूं दिलको भयहै ।
कल्याणकारी धर्म्म युक्त ये बचन हमारा उम्दा है ।।
बिना उपाय किये से कर्म जो सिद्ध वृथा ही होजा है ।

कहै 'घीसा' दिल उसमें सतदो ऐसी

टेक—जो दुनियामें बसनाहै सुनध्यान

ख्याल—उपायसे ना कर्म सिद्ध हो मन

परिणाम युक्त कार्योंमें परिणाय अ

जल्द करे ना करे सोच के बिगाड़

कर्मों के फल उमंग मन की इनको

झड़—जो आमद खर्च ना जाने ना कोष राज्य पहिचाने ।

ना दण्ड प्रमाणकी शोधी ऐसे राजा नीति विरोधी ॥

तोड़—राज्य के योग नहीं वो, राजा गिने हार ना जीतको,

विपता के बीच फंसना है ॥१॥

ख्याल—ठीक २ इन प्रमाणों को जाने सो उत्तम भूपाल ।

धर्म कर्म ज्ञान युक्त हो राज्य को प्राप्त होय तत्काल ॥

मैं राजा हूँ इसी में भूले अनुचित करे जोखाम ख्याल ।

जैसे बुढ़ापा सुन्दर रूपका करदेनाश राज्यधन माल ॥

झड़—मछली जो कांटा सटके, वो आप मौतमें अटके ।

त्यों लोभी लोभ में लोचै, मूरख ना फल को सोचै ॥

तोड़—बार २ पछतान है घर ओछों की नीति को ।

फिर लोगों का हंसना है ॥२॥

ख्याल-उन्नतिचाहने वालेपुरुषकोखानेयोग्यखानाचहिये ।